रिकार्डः-कौन आया मेरे मन के द्वारे... ॐ पिताश्री 9/1/62
ॐ शान्ति। शिवबाबा बच्चों प्रति डायरैक्शन देते हैं कब भी ऐसे नहीं समझना कि नर्कवासी मनुष्य ..... भी कल्याण कर सकते हैं। यह कौन कहते हैं? **p.p.p.** जो नई दुनिया स्वर्ग लाने वाला है। वो है हेविनली गॉड फादर। इस एक को ही रहमदिल कहा जाता है। बाकी सब बेरहम हैं। ..... श्री श्री 108 जगतगुरु अथवा भगवान अपन को कहलाते; परन्तु सारी दुनिया पर बेरहमी करते हैं। नर्कवासी एक/दो पर बेरहमी करते हैं। सबसे जास्ती जो अपन को बड़े2 अवतार, पैगम्बर, गुरु आदि मानते हैं, सब झूठ बोलते हैं। गॉड फादर को ही **Truth** कहा जाता है। सारी दुनिया का गुरु कोई मनुष्य नहीं हो सकता। जो भी हैं सभी नर्कवासी हैं। नर्क वासियों ने नर्क में यह सब यज्ञ रचे हैं। स्वर्ग तो अभी है नहीं; परन्तु समझते नहीं हैं। खुद ही कहते हैं इस महाभारी लड़ाई बाद सतयुग की स्थापना होगी। नर्क का विनाश होगा। गीता का भगवान भी कहते हैं मैं जब यह रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ रचता हूँ उससे यह विनाश ज्वाला प्रज्वलित होती है। खुद है लगवाने वाला अथवा शंकर द्वारा विनाश कराने वाला बाप है। तो इस लड़ाई के बाद ही जबकि सतयुग की स्थापना होनी है तो फिर यह यज्ञ आदि क्यों रचते हैं? बच्चों को अंतर्मुख होकर बातें समझनी चाहिए और फिर उनको रेस्पांड करना चाहिए। अखबारों में तो किस्म2 की बातें पड़ती हैं। अनेक भगवान, अनेक गुरु बने हैं। जो अपन को भगवान समझते, वो हैं बड़े से बड़े असुर। बाकी शास्त्रों में जो दिखाते हैं ....वस निकल विनाश किया आदि यह सब दंद कथायें। बाबा कहते यदा2 हि धर्मस्य..... अभी अधर्म है ना। 100% विकार हैं। अशुद्ध अहंकार भी 100% है। देखो तो अपन को भगवान समझ बैठे हैं। नर्कवासी देहधारी मनुष्य फिर अपन को भगवान कहते। जिस भगवान के लिए कहा जाता कि वो अजन्मा है और अभी के तमोप्रधान बुद्धि फिर अपन को **P.** कहलाते हैं। इसलिए अब बाबा कहते हैं इन गुरु-गोसाई सबसे बुद्धियोग तोड़ मामेकम् याद करो। फिर अन्त मति सो गति हो जावेगी। तो ख्यालात चलनी चाहिए कैसे रेसपॉण्ड करें। अगर यह महाभारी महाभारत लड़ाई है इनके बाद तो ज़रूर सतयुग की स्थापना होगी। 5000 वर्ष पहले भी जब नौ ग्रह मिले थे ज़रूर उस समय पांडव भी होंगे। देखो, विचार-सागर-मंथन कैसे करना चाहिए। बाबा राज़ बताते हैं। कहते भी हैं नौ ग्रह मिले थे। महाभारी लड़ाई लगी थी ऐटामिक बॉम्ब्स की। यादव भी थे, तो ज़रूर कौरव भी होंगे, पांडव भी होंगे। पांडवों का डिक्टेटर स्वयं गीता का भगवान भी होगा। महाभारी लड़ाई तो है ही गीता की। यादवों ने मूसल निकाल विनाश किया था। कौरव भी थे। कौरवों के बाद फिर पांडवों की जीत हुई थी अर्थात् देवी-देवता धर्म की स्थापना हुई थी। तो अनेक धर्म भी ज़रूर विनाश हुए होंगे। देखो, यह ख्याल करना होता है। ऐसे2 विचार-सागर-मंथन कर फिर कोई अखबार में लिखना चाहिए। ज़रूर पांडव थे शक्तिसेना भी होगी जिन पर ज्ञानामृत का कलश रखा। अनेक धर्मों के विनाश लिए महाभारत लड़ाई लगी होगी। अब भी ज़रूर फिर वो ही वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट होनी होगी। यह है पुरानी दुनिया तो ज़रूर पुरानी दुनिया का विनाश होना होगा। ऐसे2 लिखकर अखबार में डालो जबकि लड़ाई लगी है। सतयुग स्थापन होना है तो खुशी होनी चाहिए। शंकर द्वारा विनाश कराने वाला स्वयं भगवान है। गीता का भगवान कृष्ण लिखने से सारा मूँझ पड़े हैं। इसलिए शिव भगवान को न जानने

कारण फिर सब मनुष्य अपन को भगवान कहने लग पड़े हैं। इसको ही धर्म ग्लानि कहा जाता है। तब बाबा कहते हैं मैं आया हूँ। तो ही गीता का पार्ट फिर से बज रहा है। यह वो ही रुद्र यज्ञ है ना। ज़रूर आसुरी सम्प्रदाय भी है। शक्तियों को कलश दिया है। ज़रूर वो ही आकर आसुरी को देवता बनाती होगी। तो वो ही नौ ग्रह फिर वो ही सद्गुरु होगा। देखो बुद्धि में बैठता नहीं है। खुद भी कहते हैं; परन्तु अब देखो कितना फालतू ..... कर रहे हैं .....पर। हम कहेंगे यह मैटीरियल यज्ञ भी 5000 वर्ष पहले हुए होंगे। इस ज्ञान के बाद फिर यह सब यज्ञ खत्म हो जावेंगे। फिर ज्ञान यज्ञ है न हठयोग के यज्ञ होंगे लड़ाई के बाद तो स्वर्ग स्थापन होता है तो वहाँ कुछ भी यज्ञ आदि न होने चाहिए। वो फिर द्वापर से शुरू होते हैं। तब सन्यासी आते हैं तो ऐसे विचार–सागर–मंथन करना चाहिए। फिर अखबार वालों को लिखना चाहिए। कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। गीता का भगवान कृष्ण तो हो नहीं सकता। कहते हैं रूप बदल आओ। तो कृष्ण रूप बदल किसमें आया? यह समझने की बातें हैं ना। समय तो वो ही है। यादवों ने बरोबर मूसल निकाले और अपने कुल का विनाश किया था। सो अब भी होगा। वो है यूरोप की तरफ। भारत तो अविनाशी खंड है। इनकी बहुत महिमा है; क्योंकि **p॰p॰p॰** शिव की जन्म भूमि है। है तो कृष्ण की भी जन्मभूमि; परन्तु पहले शिव की जन्म भूमि। पहले शिव जयन्ती फिर कृष्ण जयंती। इन बातों को समझने में समय लगता है। कोई समझ भी जाते फिर जीवन बनाना, पवित्र रहना बड़ी मुश्किलात है। हंस और बगुले इकट्ठे रह न सके। इसलिए फिर रुद्रयज्ञ में असुरों के विघ्न पड़ते हैं। शुरू से पड़ते आये हैं। बहुत बच्चियाँ मार खाती हैं। पति लोग मार कर विकार देते। ऐसे भी बहुत केस होते हैं। फिर क्या करें? अगर ..... दे तो भी हंगामा हो जाता है। स्त्री का पति कुछ न कहेगा तो फिर भाई अथवा बच्चा लड़ने लग पड़ेगा। ऐसी हालत है दुनिया की। होता भी है ड्रामानुसार। कितने बड़े श्री श्री 108 साईबाबा, महरबाबा बने हैं। हैं सब नर्क में रहने वाले मनुष्य। वो तो उल्टी बातें ही सुनावेंगे। पतित दुनिया है। पावन बनाना तो शिवबाबा का ही काम है। बाबा कहते हैं कितने मूर्ख, नालायक बन पड़े हैं। आजकल झूठे ही ऐसी ऐसे निकले हैं जो ..... देते। मालूम नहीं पड़ता। तो बाबा कहते अभी झूठे भगवान कहलाने वाले भी इतने निकल पड़े हैं जो सच्चे बाबा को दबा देते हैं। तुम बच्चों को अब महावीर बनना है। गाया भी हुआ है मेरा तो शिवबाबा, दूसरा न कोई। वो ही सबका बाप है। शिवबाबा कहते मैं सबको वापिस ले जाने आया हूँ। अब ड्रामा पूरा होता है। एक भी मनुष्य इस दुनिया में त्रिकालदर्शी, आस्तिक नहीं है। आस्तिक ..... तो त्रिकालदर्शी ज़रूर हो। बाबा को जानने वाला हो तो उनकी रचना को भी ज़रूर जाने। एक भी आस्तिक नहीं है। सब नास्तिक हैं। बाप को न जानने वाले। बाकी ऋद्धि–सिद्धि वाले भी अनेक हैं। लण्डन में क्या होता है झट बता देंगे; परन्तु ..... क्या। समझो तुमको शिवबाबा का, ब्र॰वि॰शं॰ का सा॰ होता है। ल॰ना॰ का भी सा॰ होता है। अच्छा फिर क्या। ज्ञान तो कुछ मिला नहीं। जब **p॰** आकर ज्ञान और योग ..... मुक्ति को पा सके। बाकी ..... ऋद्धि–सिद्धि वाले तो बहुत हैं। ..... नहीं है। बड़ी कुस्ती करती है। तब बाबा कहते .....

..... जीत पानी है। इसलिए कवच पड़ा रहे। कवच का अर्थ ही है मनमनाभव होना। शिवबाबा को याद करो। देही अभिमानी बनो। इस अन्तिम जन्म में तुम एक ही बारी देही अभिमानी बनते हो। ..... कलियुग अन्त .....। अभिमानी बनने की शिक्षा कोई देता नहीं। ल॰ना॰ आदि सभी देह अभिमानी है। इस समय ही देही अभिमानी बनना सहज है; क्योंकि अब नंगे ही शरीर छोड़ मेरे पास आना है। देवताएँ क्यों देही अभिमानी बने। उनको वापिस थोड़े ही जाना है। यह ज्ञान तुमको सिर्फ अभी मिलता है। तुम नंगे थे। फिर यह जिस्म धारण कर पार्ट बजाया। अब फिर नंगे होकर वापिस जाना है। कितनी अच्छी2 बातें समझाते हैं। अवस्था को जमाना है। माया .... जीत पहननी है। गृहस्थ व्यवहार में तो रहना है। हंस–बगुले इकट्ठे रहते हैं तो विघ्न पड़ते हैं। असुरों के सितम भी बहुत सहन करनी है। घर बैठे प्रण कर लेनी है बाबा कुछ भी हो जाये हम वरसा तो ज़रूर लेंगी। बहुत2 मार खाती हैं। ड्रामानुसार यह पार्ट कल्प पहले भी चला था। तो बहुत सितम सहन करती हैं वो हैं सौभाग्यशाली। फिर भी आ मिली है ना। उनकी तो बन गई ना। हाँ, इसमें बहुत मेहनत है। असुर से देवता बनना है। बाबा नई2 बातें समझाते रहते। युक्तियाँ बताते रहते हैं। इसी को विचार–सागर–मंथन कहा जाता है। बुद्धि की मथानी चलानी चाहिए। रात को भी शिवबाबा को याद कर सो जाओ। सर्विस का शौक होगा तो उनको नींद थोड़े ही आवेगी। ख्याल चलता रहेगा आज इस प्वाइंट पर क्या2 समझावें। इनको कैसे पकड़ें। तब ही तुम ऊँच पद पा सकेंगे। ज्ञान को अच्छी रीति घोटना है। जब ज्ञान घिसेंगे तब ही राजतिलक लेने लायक बनेंगे। जो तीखे बच्चे हैं उनको पकड़ फॉलो करना चाहिए। ..... बन रुद्रमाला के दाने बने। शिव तो फूल है। ..... भी है डबल दोनों। फिर है माला। तो पहला दाना बनने का पुरुषार्थ करना है। हमारा यह है सहज योग। हठयोग तो अनेक प्रकार के हैं। बाबा ने किस्म2 के हठयोग देखे हैं। अब बाबा कहते हैं देह सहित देह के सभी संबंधों आदि को भूल जाओ। अशरीरी बन जाओ। हम बाबा के बच्चे हैं। यह शरीर छोड़ चले जावेंगे। अन्त मति सो गति हो जावेगी। बाबा कहते मन्मनाभव, मद्याजीभव। बुद्धि में यह ड्रामा का चक्कर भी फिरता रहे। फिर तुम जाकर राजा–रानी बनेंगे। एक ..... दिखाते हैं। दो भुजा ल॰ की, दो ना॰ की और कोई चित्र है नहीं। बाकी दुर्गा, काली, सरस्वती यह सब एक के ही नाम हैं। एक ही बी.के.सरस्वती है जिसकी यह सेना है। बाकी कच्छ–मच्छ अवतार, परसराम अवतार क्या2 बैठ बातें बनाई हैं परशुराम ने कुल्हाड़ा ..... किया। ..... है शास्त्रों का भूसा। शिवबाबा कहते लाडले बच्चे जीते जी मर जाओ। यह शास्त्रों का भूसा बुद्धि से निकालो। जो मैं कहूँ वो सुनो। इस भूसे को मेरे सामने रिपीट मत करो। ..... तुमको ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों–शास्त्रों का सार बताता हूँ। तब तो बाबा के हाथ में शास्त्र दिखाते हैं ना। बाकी नाभि आदि की कोई बात नहीं है। मैं नॉलेजफूल ब्लीसफुल हूँ, सब पर रहम करने वाला हूँ। सबको सुखधाम, शान्तिधाम ले जाऊँगा। .....। बाप अपना कार्य कर रहे हैं। अच्छा! ॐ